ISBN : 978-93-83813-31-5

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे • डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक

• डॉ. एस. जे. पवार • डॉ. एस. जे. जहागीरदार

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

BLDEA's S.B.Arts & K.C.P. Science College
BIJAPUR
-586103.

प्रधान संपादक

डॉ. एस. टी. मेरवाडे

डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक

डॉ. एस. जे. पवार

डॉ. एस. जे. जहागीरदार

With Best Compliments from

Principal,
BLDEA's SB Arts & KCP Science College,.
Vijayapur

सौम्य प्रकाशन

'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

BHARATIYA SAHITYA KA ANTARARASHTRIYA PARIPREKSHYA :
ISBN 978-93-83813-31-5
Publisher : Soumya Prakashan
Kabeer Kunj, Mahabaleshawar Colony
Vijayapur – 586 103

© Publisher

First Edition : 2018
Copies : 1000
Pages : xii + 448 = 460
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
सह संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-31-5
प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)
प्रथम मुद्रण : 2018

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 448 = 460
मूल्य : **रु. 300/-**
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो
मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विठ्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

अनुक्रमणिका

1. भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य : विविध आयाम
• प्रो. ऋषभदेव शर्मा 1

2. कन्नड़ साहित्य का अंतरर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य
• डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' 8

3. मराठी नाटक की विकास यात्रा
• प्रो. प्रतिभा मुदलियार 19

4. कोंकणी कहानी साहित्य: नारी एवं वृद्ध विमर्श के सन्दर्भ में
• प्रो. प्रभा भट् 32

5. भारतीय साहित्य में तेलुगु साहित्य का योगदान
• डॉ. पठान रहीम खान 42

6. भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य : तमिल के विशेष संदर्भ में
• डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा 50

7. भारतीय साहित्य को गुजराती उपन्यास साहित्य का योगदान
• डॉ. ए. डी. चावडा 56

9. 20 वीं सदी की प्रमुख कहानियों में आदिवासी समूह का सामाजिक संघर्ष
• प्रो. एस्. के. पवार 65

10. हिंदी दलित साहित्य का प्रेरणास्त्रोत
• प्रो. कांबले अशोक 72

11. कर्नाटक में हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता
• डॉ. एस. टी. मेरवाडे 78

12. मछुआरों की जिन्दगी की कथा-व्यथा को व्यक्त करता उपन्यास 'सागर, लहरें और मनुष्य'
• डॉ. शंकर तेरादाल 84

13. भारतीय मुस्लिम समाज की मानसिकता की पडताल करता उपन्यास 'अपवित्र आख्यान'
• डॉ. साहेबहुसैन जे. जहागीरदार 88

14. महानगरीय श्वेत-श्याम पक्ष को दर्शाता उपन्यास 'कबूतरखाना'
• डॉ. सदाशिव पवार 99

15. हिन्दी काव्य साहित्य में स्त्री-विमर्श : मंगलेश डबराल के संदर्भ में
• डॉ. श्रीमती विद्यावती जी. रजपूत 103

16. अनामिका के साहित्य में वृद्धास्था विमर्श
• डॉ. चंदन कुमारी 108

17. सुभाष शर्मा का 'भूख' कहानी संग्रह समकालीन समाज का आईना
• प्रो. एम. ए. पीराँ 114

18. हिन्दी साहित्य में दलित विमर्शः आत्मकथाओं के संदर्भ में
• प्रो. असजद एम. सिद्दीकी 118

19. 'साहित्य में पर्यावरण विमर्श'
• डॉ. अमिता मानव 123

20. हिन्दी पत्रकारिता
• डॉ. सुजाता एन. मगदुम 127

21. हिंदी बाल साहित्य
• डॉ.एम.ए. लिंगसूर 132

22. हिंदी भाषा : स्थिति-गति
• डॉ. एच. एम. अत्तार 135

23. हिन्दी भाषा तथा मीडिया
• डॉ. बी. एम. राठोड 141

24. भूमंडलीकरण और हिंदी साहित्य
• डॉ. शैलजा 144

25. हिंदी भाषा का बदलता स्वरूप : भविष्य की हिंदी के संदर्भ में
• डॉ. भूपिंदर कौर 148

26. मन्नू भंडारी की कहानियों में वृद्धा नारी के मातृत्व मोह का चिंत्रण
• डॉ. लविन्द्रसिंह रणजितसिंह लबाना 154

27. शेखर जोशी- बहुस्तरीय और बहुआयामी यथार्थ के विरल चितेरे
• डॉ. रोहिनी जे. पाटील 157

28. मैत्रेयी पुष्पा कथा साहित्य स्त्रियों का आर्थिक संघर्ष
• डॉ. नीलांबिका पाटील 162

29. आधुनिक समाज में थेर्ढ जेंडर का जीवन
• मंजू नायर एस. 165

30. दलित सहित्य आंदोलन के पूर्व के हिन्दी कथा साहित्य में दलितवादी स्वर
• डॉ. शैलजा तुलजाराम होटकर 169

31. हिन्दी भाषा तथा मीडिया
• डां. मंहातेंश. आर. अंची 174

32. ऋग्वेद का मुक्ति विमर्श
• डॉ. विष्णुप्रसाद चन्द्रकान्त त्रिवेदी 176

33. स्त्री - विमर्श
• प्रा. नयन भादुले - राजमाने 179

34. हिंदी कथा साहित्य में नारी विमर्श
• स्वपना गोरे 185

35. इक्कीसवीं सदी के नाटकों में अभिव्यक्त स्त्री
• डॉ. ज्योति जोशी के. 188

36. 'समुद्र ने भी सुना' : एक विमर्श
• डॉ. अमित एस. चिंगळी 197

37. प्रदीप सौरभजी के 'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में 'स्त्री' विमर्श
• श्रीमती ए. ए. पाट्टेवाले 200

38. समकालीन हिंदी दलित कथा साहित्य : विविध आयाम
• डॉ. एम. डी. अलीखान* पी. प्रेमचन्द** 208

39. हिन्दी बाल साहित्य
• प्रीति महेश्वरी 213

40. शरद सिंह की कहानियों में स्त्री की मानसिक द्वंद्वता
• डॉ. ममता एच. शिरगंबी 217

41. जगदीश चन्द्र माथुर के नाटकों में समस्यायें एवं व्यंग्य
• डॉ. रवींद्र ल. सत्तिगेरी 220

42. भूमंडलीकरण की चुनौतियों से मुठभेड करती मंगलेश डबराल की कविताएँ
• रम्या एल. 224

43. विश्वपटल पर हिन्दी की स्थिति
• डॉ. महानंदा बी. पाटील 228

44. दूरदर्शन और हिंदी
• डॉ. सुपर्णा मुखर्जी 233

45. उषा प्रियंवदा कृत 'अन्तर्वंशी' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श
• गीता पाटील 236

46. वैश्वीकरण की प्रक्रिया एवं हिंदी भाषा
• डॉ. एम. जे. संकपाल 239

47. यू. आर. अनंतमूर्ति के कहानी साहित्य का हिंदी अनुवाद (अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद के संदर्भ में)
• रेशमा नदाफ 242

48. दलित मुक्ति - चेतना और आम्बेडकर
• डॉ. गट्र्ला रमेश बाबु 250

49. आदिवासी जीवन पर भूमंडलीकरण का प्रभाव
• एन. वंशीकृष्णा 253

50. वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा का महत्व
• डॉ. हरिदास्यं समादेवी 256

51. हिंदी साहित्य में अदिवासी स्त्री
• प्रा. चौधरी अनिता विश्वनाथ 259

52. चिरंजीत के 'अपने-अपने भूचाल' नाटक में सामाजिक एवं पारिवारिक संघर्ष
• डॉ. नदाफ मासिमपीर 264

53 दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र का समाजविज्ञान
• प्रो. हसन खाद्री 268

54. आरिगपूडि जी के 'अभिशाप' उपन्यास में व्यक्त दलित चेतना
• डॉ. नारायण गुरुसिध्द बगली 272

55. रामदरश मिश्र के उपन्यास साहित्य में चित्रित ग्रामीण जीवन
• डॉ. प्रभावती श. शाखापुरे 277

56. चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'आवां' में चित्रित महानगरीय बोध
• श्रीमती गीता निकम 281

57. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच को कन्नड भाषा नाटककार गिरीश कार्नाड का योगदान
• डॉ. के. वी. उमाशंकर (शव) 285

58. हिन्दी साहित्य में (आर्थिक रूप से विपन्न) नारीः एक अध्ययन
• डॉ. के. वी. कृष्णमोहन 288
59. बाल साहित्य और उसकी विधाएँ
• डॉ. अनीता एम. बेलगाँवकर 293
60. नवोदय तथा छायावादी काव्य का आदान - प्रदान
• डॉ. मालतेश स. बसम्मनवर 296
61. निम्नवर्ग के बच्चों में शिक्षण की समस्याएँ और समाधान साहित्य अमृत पत्रिका में प्रकाशित कहानियों के संदर्भ में
• सोनाली तेरदाले 302
62. हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श
• सुनिता रा. हुन्नरगी 305
63. 'सुनामी सडक' में चित्रित पर्यावरण विमर्श
• वर्षाराणी जबडे 310
64. नई सदी के हिंदी लेखिकाओं के उपन्यासों में अंकित राजनीतिक मूल्य
• अमोल तुकाराम पाटील 315
65. मंजूर एहतेशाम के कहानियों में चित्रित अल्प संख्यक विमर्श
• फिरोज बालसिंग 319
66. हिंदी महिला काव्य में बदलता परिवेश (स्त्री सशक्तिकरण के संदर्भ में)
• वीरेश बिसनल्लि 322
67. नरेश मेहता के काव्यों में आधुनिक बोध
• शिवराजकुमार कल्लूर 325
68. आदिवासी उपन्यास और भूमंडलीकरण
• शेख सादिक पाषा 332
69. सुशीला टाकभौरे की कविताओं में स्त्री चिंतन
• डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील 334

70. मायानन्द मिश्र के 'प्रतमं शौल पुत्रीच' उपन्यास में ऐतिहासिकता
• सावित्री य. गजाकोश 341

71. हिंदी पत्रकारिता का बाल साहित्य के लिए योगदान
• डॉ. शीला चौगुले 347

72. नासिरा शर्मा जी की कहानियों में अल्पसंख्यक विमर्श
• शेख परवीन बेगम इब्राहीम 353

73. अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में लिखे गए उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याएँ
• डॉ. राजेन्द्र पावार 361

74. वर्तिका नन्दा के 'थी. हूँ...रहूँगी..' में चित्रित राजनैतिक संदर्भ
• प्रा. विश्वनाथ मुजावर 366

75. वर्तिका नन्दा की कविता में स्त्री संवेदना
• डॉ. नीता श्रीकांत दौलतकर 371

76. गिरिराज किशोर के दो प्रमुख उपन्यासों में दलित चेतना
• डॉ. आरती वर्मा 376

77. डॉ. बालशौरी रेड्डी के जिंदगी की राह में नारी चित्रण
• गंगाधर गेंड 380

78. 'बीस रुपए' : अभिशप्त जीवन का कटु यथार्थ
• डॉ. रवीन्द्र एम. अमीन 384

79. हिंदी भाषा : स्थिति गति
• सुनीलकुमार यादव 392

80. उषा प्रियवंदा के साहित्य में स्त्री विमर्श
• प्रो. विद्या एस. हिरेमठ 398

81. अनुवाद: विश्व से जुडने का सशक्त मध्यम
• राहुल लक्ष्मण कासार 401

82. भूमंडलीकरण और हिन्दी साहित्य
• डॉ. एम. सिद्दय्या 406

83. नई सदी के हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त आर्थिक समस्याएँ
• वैशाली वेंकटेश कुंभार 410
84. स्त्री विमर्श अनामिका-चुनी हुई कविताओं के संदर्भ में
• डॉ. कमलारानी 414
85. हिंदी गद्य साहित्य: विविध विमर्श
• डॉ. भारती एच. दोडमनी 419
86. 'चंद्रगिरि के किनारे' उपन्यास में तलाक की समस्या
• डॉ. खुद्दुस अ. पाटील 423
87. हिंदी पत्रकारिता
• नीता पाटील 427
88. आरिगपूडि के उपन्यास 'उल्टी गंगा' में नारी समस्या
• डॉ. बापुराव व्ही. पाटील 430
89. हिन्दी बाल साहित्य
• प्रो. सुनील ब. ताटे 437
90. हिन्दी पत्रकारिता
• प्रो. ए. व्हि सूर्यवंशी 443

■■

कर्नाटक में हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे

लोकतंत्र में पत्रकारिता का विशेष महत्त्व है। मनुष्य अपने आसपास घटित होनेवाली घटनाओं के बारे में सदा जानने को इच्छुक रहता है। उसकी जानने की यह इच्छा वर्तमान समय में विश्व की प्रमुख गतिविधियों तक बढ गई है। जानने की यह उत्कंठा जनसंचार के विविध साधनों से ही पूरी हो पाती है। पत्रकारिता का क्षेत्र काफी व्यापक और विस्तृत होता जा रहा है। पत्रकारिता दैनिक जीवन का ही एक हिस्सा बन गई है। यदि किसी दिन हमें समाचारपत्र उपलब्ध नहीं हों तो उस दिन हमें जीवन में रिक्तता की सी अनुभूति होती है। वस्तुत: पत्रकारिता हमें समाज के विभिन्न वर्गों, समस्याओं तथा विचारों को समझने में सहायता देती है।

हिन्दी पत्रकारिता कर्नाटक में व्यावहारिक रूप में नहीं, अपितु एक न एक संस्था या संगठन के साथ जुडकर पल्लवित हुई है। वास्तव में अन्य प्रांतों की तुलना में कर्नाटक की हिन्दी पत्रकारिता का क्षेत्र अधिक समृध्द नहीं है। कर्नाटक में 1948 के बाद अनेक छोटी बडी हिन्दी पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई हैं। भारतवाणी, हिन्दीवाणी, हिन्दी सुधा इन तीनों पत्रिकाओं का संबंध हिंदी प्रचार संस्थाओं से था और इन पत्रिकाओं के सामने प्रमुख रूप से लक्ष्य थे-

1. संस्था की पत्रिका होने के कारण उस संस्था की मासिक गतिविधियों का परिचय प्रस्तुत करना।
2. प्रांतीय भाषा, साहित्य का हिन्दी के माध्यम से प्रचार प्रसार करना।
3. संस्था द्वारा संचलित परीक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए परीक्षोपयोगी लेख छापना।

हिंदी दर्पण

कर्नाटक के अंतर्गत हिन्दी के पालन-पोषण हेतु प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं पर दृष्टिपात करने का आज सफल प्रयास किया जा रहा है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार की आर्थिक सहयोग तथा राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त बेलगाँव विभागीय हिंदी सेवा शिक्षण समिति, सुलेभावी से मुद्रित हिंदी की त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदी दर्पण' अपने आप में अहिंदी क्षेत्र के हिंदी में अनूदित साहित्य, समकालीन हिंदी कथा साहित्य, नाटक साहित्य, हिंदी में संपन्न कार्यशाला तथा विचार गोष्ठियों की जानकारी अन्य आदि विषयों पर लिखी गयी आलेखों को समेटने में लगी हुई है। प्रस्तुत पत्रिका के संस्थापक एस. एच. जी. पवारजी और इसके प्रधान संपादक का भार वहन करने का दायित्व श्री सुरेंद्र डी. पवारजी पर था।

भारतवाणी

कर्नाटक की हिंदी पत्रकारिता को एक सदृढ आयाम सुनिश्चित रूप देने में इस पत्रिका का विशेष योगदान है। यह कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा, धारवाड की मुख्य पत्रिका है। कर्नाटक में हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत के समय सन् 1956 में इस पत्रिका का आरंभ हुआ। इस पत्रिका ने हिंदी के माध्यम से आधुनिक कन्नड साहित्य के कवियों, कृतियों और प्रवृत्तियों पर आलोचनात्मक लेख प्रकशित कर उत्तर दक्षिण के बीच सशक्त रूप से कार्याभार संभाला।

पत्रिका ने कर्नाटक की संस्कृति, कन्नड साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय पाठकों को कराया। डॉ. चंदूलाल दुबे जी के संपादकत्व में कर्नाटक हिंदी पत्रकारिता की एक अच्छी नींव तैयार की किंतु धीरे-धीरे इसके स्तर में गिरावट आने लगी न केवल साज-सज्जा अपितु सामग्री संचयन में यह पत्रिका अपनी पूर्ववर्ती छवि खोने लगी है। आजकल इसका प्रकाशन भी नियमित रूप से नही हो रहा है।

मैसूर हिंदी प्रचार परिषद पत्रिका

यह मासिक पत्रिका सन् 1956 से प्रकाशित हो रही है। इसके प्रधान संपादक श्री बी. रामसंजीवय्या हैं। परीक्षोपयोगी लेखों के अतिरिक्त इसमें हिंदी

की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का पुन: प्रकाशन किया जाता है। इस पत्रिका का विशेष आकर्षण हिंदी साहित्य जगत की गतिविधियों से जुड़े लेख हैं। अपनी सुंदर साज-सज्जा और आकर्षक छपाई के कारण यह पत्रिका पठनीय है।

यह पत्रिका मैसूर हिंदी प्रचार परिषद राजाजीनगर, बेंगलोर के सौजन्य से प्रकाशित है। प्रस्तुत पत्रिका में समीक्षात्मक आलेख, हिंदी के कविता साहित्य, उपन्यास साहित्य, कहानी साहित्य, नाटक साहित्य, हिंदी साहित्य का इतिहास अन्य आदि विषयों पर लिखित आलेखों की जानकारी प्रस्तुत पत्रिका में समाहित है।

मानसी

इस पत्रिका का प्रकाशन मैसूर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा सन् 1965 में प्रो. नागप्पा और डॉ. हिरण्मय जी के संपादन में शुरु हुआ। इसमें प्रमुख रूप से हिंदी अध्यापकों शोध छात्रों के शोध संबंधी लेख को प्रकाशित किया जाता था। जिसका वितरण शोध छात्रों एवं विश्वविद्यालय में किया जाता था। परंतु यह नियमित रूप से प्रकासित न हो पायी। सन् 1981 में एक नयी स्फूर्ति के साथ न केवल नियमित रूप से प्रकाशित हुई बल्कि 1963 में यह अर्ध्दवार्षिकी भी बनी। पर किन्हीं कारणों सन् 1993 से मानसी पत्रिका का प्रकाशन स्थागित है।

हिंदी प्रचार वाणी

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, चामराज पेट, बेंगलोर द्वारा प्रचार वाणी गतिमान पत्रिका मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से सन् 1960 से प्रकाशित इस पत्रिका के संपादक स्व. डॉ. आर. श्रीनिवास शास्त्री और इसके प्रधान संपादक का भार वहन कर रहे थे। सुश्री. बी. एस. शांताबाई, प्रस्तुत पत्रिका में साहित्य के विभिन्न विधाओं पर समीक्षात्मक आलेख, कन्नड से हिंदी में अनूदित आलेख केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा सूतिच-सूचनाएँ तथा हिंदी के सभा समारोहों का ब्यौरा प्रदान करने में पत्रिका व्यस्त रही है

'हिंदी सुरभी' केंद्र तथा राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त यह पत्रिका श्री कामाक्षी विद्यावर्धक संघ, अंकोला से सुचारु रूप से प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका के संपादक अध्यक्ष श्री एम. वी. महाले जी हैं और श्री वासुदेव महाले प्रधान संपादक के पद को संभाल रहे हैं। प्रस्तुत पत्रिका मध्यकालीन हिंदी कवियों, प्रयोजनमूलक हिंदी तथा हिंदी साहित्य के अन्य विधाओं पर लिखी गयी आलेखों की जानकारी प्रदान करती है।

भाषा पीयूष

प्रस्तुत त्रैमासिक पत्रिका कर्नाटक हिंदी प्रचार समिति, जयनगर, बेंगलोर से सन् 1960 से प्रकाशित है स्व श्री. एच. वी. रामचंद्रराव तथा डॉ. वि. रा. देवगिरी जी इस पत्रिका के संपादन की जिम्मेदारी का भार उठाया है। यह पत्रिका हिंदी साहित्य के विविध आयामों के साथ-साथ दक्षिण भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक वैचारिक पत्रिका के रूप में उभर पडी है।

साहित्य सौरभ

मनोहर भारती के संपादकत्व में सन् 1982 में बैंगलोर से इस मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरु हुआ। अहिंदी भाषी क्षेत्रों के साहित्य इतिहास और संस्कृति को भिन्न भाषा भाषियों के बीच घनिष्ठता बढाना इस पत्रिका उद्दश्य था। साथ ही दक्षिण भारत के अनेक अहिंदी भाषा-भाषियों द्वारा हिंदी में जो कुछ भी लिखा गया-उसे तथा लेखकों को प्रोत्साहित कर उनकी गंध हिंदी द्वारा हिंदी जगत के विशाल प्रांगण में पहुँचाने का कार्य करने का प्रयास हुआ। इस अच्छे उद्देश्य को लेकर शुरू की गई इस पत्रिका का आर्थिक कठनाइयों के कारण दुखद अंत हुआ।

अहिंसा दर्शन

श्रीकंठमूर्ति के संपादकत्व में सन् 1989 में आरंभ हुई यह मासिक पत्रिका थी जो बेंगलोर से प्रकाशित होती थी। अहिंसा का प्रचार करना इसका मूल उद्देश्य था। बौध्द वैदिक, जैन, पारसी, ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों के अहिंसा संबंधी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन इसमें प्रकाशित होता था। सन् 1977 में इसे पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया।

कुंतल भारती

इस वार्षिक पत्रिका का श्रीगणेश सन् 1972 में हुआ। प्रो. सरगु कृष्णमूर्ति के संपादन में यह पत्रिका बेंगलोर से प्रकाशित होती थी। इसमें हिंदी विभाग के आचार्य वर्ग, शोधार्थियों के शोधपरक तुलनात्मक शोध अध्यन संबंधी लेख प्रकाशित होते थे। इस पत्रिका का प्रकाशन आजकल स्थगित है।

बसव मार्ग

बसव समिति बेंगलोर की ओर से 37 वर्षों से यह पत्रिका मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार के सौजन्य से प्रकाशित हो रही है। डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' इसके प्रधान संपादक हैं। यह पत्रिका बारहवीं शाताब्दी के सामाजिक एवं धार्मिक आंदोलन के पुरोधा बसवेश्वर और उनके समकालीन शरणों के जीवन और संदेश के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित है।

कर्नाटक हिंदी सभा पत्रिका

कर्नाटक हिंदी सभा मंड्या द्वारा 2007 से 'कर्नाटक हिंदी सभा पत्रिका' का श्रीगणेश किया गया। आज भी यह पत्रिका सुचारु रूप से कर्नाटक हिंदी सभा, मंड्या द्वारा ही गतिशील है। एस. विनयकुमार जी प्रस्तुत पत्रिका के प्रधान संपादक के साथ साथ स्वयं प्रकाशन कार्य का भार वहन करने में लगे हुए हैं। हिंदी के प्रचार-प्रचार हेतु यह सभा सदैव क्रियाशील रहती है। यह पत्रिका सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक क्षेत्रों से जुडी हुई है। प्रस्तुत पत्रिका त्रिवेणी संगम का प्रतीक बन पडी है। इसमें साहित्य के विविध आयाम अंकुरित हो रहे हैं यह संस्था लगातार संघर्षरत रहकर हिंदी प्रचार में अपना अनुपम योगदान प्रदान कर रही है।

'सृजन' हिंदी कन्नड साहित्य और संस्कृति

वैश्विक स्तर पर भारत की विविधता अत्यंत प्रसिद्ध है। भाषा-बोली, खान-पान, संस्कृति, वेशभूषा, आदि की वैविधता अनूठी है। इसलिए स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने कहा था कि भारत देश की एकता उसकी विविधता में छिपी है। भावात्मक एकता स्थपित करने तथा अंतरप्रांतीय संवाद स्थापित करने की दृष्टि से हिंदी को एक सशक्त माध्यम भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

कर्नाटक की प्रांतीय भाषा कन्नड है। गांधीजी की दूर दृष्टि भारत को अंखड रखने की हेतु हिंदी के महत्व को समझा था। दक्षिण को उत्तर से जोडने हेतु हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए सन् 1917 में मद्रास में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार संस्था की नींव रखी गई। दक्षिण भारत में हिंदी भाषा पर्याप्त रूप में प्रचार-प्रसार हो रहा है इसी संदर्भ में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान भी रहा है। इसी उद्देश्य से जनवरी 2013 से कर्नाटक के विजयपुर से सृजन हिंदी कन्नड साहित्य और संस्कृति नामक त्रैमासिक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. एस. टी. मेरवाडे सह संपादक डॉ. एस. जे जहागीरदार हिंदी विभाग के संपादक डॉ. एस. जे पवार, डॉ. शंकर तेरदाल तथा कन्नड विभाग के संपादक प्रो. बी. बी. डेंगनवर तथा डॉ. आर. वी. पाटील आदि का परिश्रम इस पत्रिका के निरंतर प्रसिद्ध का आधार है। इस पत्रिका में हिंदी तथा कन्नड के शोध लेख, कविताएँ, कहानियों के साथ-साथ हिंदी तथा कन्नड साहित्य का निरंतर अनुवाद होता है। इस पत्रिका के पिछले पृष्ठ पर हिंदी तथा कन्नड के प्रसिध्द कवियों की कविताओं का परस्पर अनुवाद इस पत्रिका की विशेषता है। देश के विविध भागों के प्रसिध्द भाषाविद तथा साहित्यकार का परामर्शदाता हैं। कन्नड भाषियों को हिंदी साहित्य से तथा हिंदी भाषियों को कन्नड साहित्य से अवगत करना इस पत्रिका का परम उद्देश्य है। यह पत्रिका केवल साहित्य और संस्कृति के लिए समर्पित है। इसमें कोई विज्ञापन प्रकाशित नहीं किए जाते हैं।

■■

एस.बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर मो. 9448185705

भारतीय साहित्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य के अनेक आयाम तो हैं ही, उसे देखने-दिखाने के भी अनेक कोण हो सकते हैं। यह परिप्रेक्ष्य कोई गढ़ा-गढ़ाया उपलब्ध पाठ नहीं है। बल्कि यह निरंतर बनता हुआ खुला पाठ है। इसके तरह विविध भारतीय भाषाओं के साहित्य की श्रीवृध्दि में भारतीयों, भारतवंशियों प्रवासियों और विदेशियों के योगदान का मूल्यांकन तो अपेक्षित है। भारतीय साहित्य की आधुनिक विश्वचेतना का आकलन भी जरूरी है। देशों और भाषाओं की सीमाओं के पार आज भारतीय साहित्य 'लोक' और 'ग्लोबल' दोनों प्रकार के सरोकारो कों संबोधित कर रहा है। विधापरक प्रयोगों की दृष्टि से भी भारतीय साहित्यकार वैश्विक आंदोलनो में निरतंर जुडे हुए हैं।

प्रो. ऋषभदेव शर्मा

978-93-83813-31-5
ISBN : 978-93-83813-31-5

सौम्य प्रकाशन, विजयपुर